THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-04 | January-202
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i4.06

बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान का महत्व

मधुलिका चौधरी[1] एवं प्रो0 राम प्रताप सिंह[2]

[1]शोधार्थी, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई एवं सहायक आचार्य, शिया पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ
[2]शोध–निर्देशक, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

सारांश

प्राचीन काल से ही बाल साहित्य किसी न किसी रूप में हमारे समक्ष आता रहा है, कभी लोरियाँ, कभी प्रभाती, कभी कहानी तो कभी गीतों के रूप में। बाल साहित्य को प्रारम्भ में वो सम्मान नहीं मिला जो बड़ों के साहित्य को मिला न ही इसके महत्व को समझा गया। परन्तु आधुनिक समय में हम देखते हैं कि बाल साहित्य न सिर्फ अपना महत्व स्थापित कर रहा है बल्कि अपने योगदान में भी पर्याप्त वृद्धि कर रहा है। आज के समय में आवश्यकता है बाल साहित्य में अधिक से अधिक बाल मनोविज्ञान के समावेश की। बाल मनोविज्ञान ही वह कड़ी है जिसके द्वारा हम बालकों से बाल साहित्य को जोड़ सकते हैं और बालकों के लिए उचित साहित्य उपलब्ध कराने के साथ ही बाल साहित्य को भी उचित सम्मान दिलवा सकते हैं।

मुख्य शब्द– बाल साहित्य, मनोविज्ञान, बालक, मनोवृत्ति, मनोभाव, बाल साहित्यकार।

प्रस्तावना

बाल साहित्य वह है जो बालकों की रूचियों, क्षमताओं, उनके मानसिक स्तर तथा उम्र को ध्यान में रखकर लिखा जाए। जो उनके बौद्धिक, मानसिक तथा आत्मिक विकास में सहायक हो और साथ ही उन्हें एक स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करें।

''सच्चा बाल साहित्य न तो कोरा उपदेश थोपता है, न आंकड़ों के मायाजाल में उलझाता है। सही मायने में बाल साहित्य बालमन की गुत्थियों को सुलझाने और उसके जीवन मूल्यों से जोड़ने का एक नायाब जरिया है। आदर्श बाल साहित्य वह है जो बच्चों के अन्तर्मन के कौतूहल और जिज्ञासा को तर्कपूर्ण, सरस, मनोरंजक ढंग से शांत कर, ऐसी लौ प्रज्ज्वलित करे ताकि स्वविवेक से वह अच्छाई और बुराई, अंधकार व प्रकाश के प्रति अपनी समझ विकसित कर सके। बच्चों की मनोदशाएँ, उनकी ज्वलंत समस्याएँ भी बाल साहित्य का हिस्सा होना चाहिए। कुल मिलाकर, बाल साहित्य यानी आनन्ददायक शिक्षा अर्थात् बच्चे का सच्चा साथी।'

बाल साहित्य विविध विधाओं के द्वारा बालकों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, जीवनी आदि विधाओं के माध्यम से बाल साहित्यकार बालकों से रूबरू होता है। बाल साहित्य न सिर्फ

बालकों का मनोरंजन करता है अपितु उनका ज्ञानवर्धक भी करता है। उनमें अच्छे मूल्यों का विकास करने के साथ ही उनकी भाषा की क्षमता तथा उनकी कल्पना शक्ति को भी बढ़ाता है।

''बाल साहित्य– लेखन अर्थात् बच्चों की भाषा में, बच्चों के बारे में और बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य। बाल साहित्य बड़ों से भिन्न एक सृजन रूप है जो बच्चों की प्रकृति, उनकी कल्पना, उनके सपनों और उनकी आंकाक्षाओं को केन्द्र में रखकर लिखा जाता है। यह रोचक और प्रेरक होना चाहिए, जिसमें बच्चों की जिज्ञासाएँ शांत और उनकी रूचियाँ परिष्कृत हों।''

बाल मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है बालक के मन का अध्ययन। परन्तु विद्वानों का मानना है कि बाल मनोविज्ञान का यह अर्थ संकुचित है। बालक की मानसिक के साथ–साथ शारीरिक और प्रत्येक अवस्था में किया जाने वाला अध्ययन बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत आता है। कहा जा सकता है कि इसमें बालक के सर्वांगीण विकास का अध्ययन किया जाता है।

''बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक के मनुष्य के मानसिक विकास का अध्ययन किया जाता है जहाँ सामान्य मनोविज्ञान प्रौढ़ व्यक्तियों की मानसिक क्रियाओं का वर्णन करता है तथा उनको वैज्ञानिक ढंग से समझने की चेष्टा करता है, वहीं बाल मनोविज्ञान बालकों की मानसिक क्रियाओं का वर्णन करता है और उन्हें समझने का प्रयत्न भी करता है।''

बाल मनोविज्ञान की सहायता से हम बालकों की रूचियों, क्रियाओं और मनोवृत्तियों को आसानी से समझ सकते हैं किस परिस्थिति में बालक कैसा व्यवहार करेगा और प्रत्येक परिस्थिति में बालकों को कैसे संभाला और संवारा जा सकता है इसका ज्ञान हमें बाल मनोविज्ञान से प्राप्त हो सकता है। किस बात से बालक प्रसन्न होता है, किस बात पर नाराज, क्या है जो उसके भीतर कौतूहल उत्पन्न करता है और किससे वो अत्यधिक जुड़ाव महसूस करता है इसका ज्ञान हमें बाल मनोविज्ञान के द्वारा भलीभांति हो सकता है।

मनोविज्ञान की इस शाखा से न सिर्फ बालकों को फायदा मिला है बल्कि बालकों के माता–पिता, बाल शिक्षक, बाल चिकित्सक तथा बाल साहित्यकारों को भी अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ है। बाल मनोविज्ञान ने न सिर्फ बालकों के जीवन को सुखी बनाया है बल्कि उनके जीवन को समृद्धशाली भी बनाया है।

''आज का बच्चा बहुत तार्किक है और उसके आई0क्यू0 की धार बहुत तेज है। उसकी सोच पूरी तरह से वैज्ञानिक और तार्किक है। वह आसानी से किसी भी बात को ग्रहण नहीं करता। किसी भी अवैज्ञानिक दलील से आप उसे सहमत नहीं कर सकते। अतः साहित्य को युगानुरूप होना पड़ेगा। बच्चों की आशा और जरूरत पर उसे पूरा उतरना होगा। साहित्यकार को बच्चों की बदलती रूचियों का सम्मान करना होगा जो साहित्य इसके कसौटी पर खरा नहीं उतरेगा उसे बच्चे नकार देंगे। उनकी बौद्धिक क्षुधा के लिए उन्हें ऐसा पौष्टिक साहित्य देना होगा जो उनके मन और बुद्धि का स्वास्थ्यवर्द्धन कर सके। जो उनकी जिज्ञासाओं को शांत कर सके। उनके प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर दे सके। आज बच्चा प्रतियोगिता के युग में जी रहा है। कैरियर के दबाव में हर सांस लेता है। जो साहित्य उसको इस तनाव से मुक्ति दिलाएगा बच्चा उसका स्वागत करेगा। बच्चों का मनोरंजन करना अथवा उन्हें कल्पनालोक में ले जाना ही साहित्यकार का उद्देश्य नहीं है। उन्हें युग की वास्तविकताओं, समसामयिक समस्याओं से भी परिचित कराएं। उन्हें उनके परिवेश से जोड़े। उनकी रूचियों, मनोविज्ञान को समझें। बालमन की सूक्ष्म परतों को खोलें। यकीन मानिए ऐसे साहित्य को बच्चा खोज–खोज कर पढ़ेगा। अतः बाल साहित्यकारों/प्रकाशकों की यह साझी जिम्मेदारी है कि वे बच्चों

को ऐसा साहित्य प्रदान करें जिससे वह उससे जुड़कर अपना अभीष्ट पा जाए और उसका बचपन और कैशोर्य ही नहीं पूरा आने वाला जीवन भी खुशहाल हो सके।''

इस प्रकार जब बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान का समावेश होगा तो वह बालकों के लिए श्रेयस्कर सिद्ध होगा। बालकों को उनके मन के अनुरूप साहित्य प्राप्त होगा जिसे वे पढ़ना भी चाहेंगे और आत्मसात भी करना चाहेंगे। अमनोवैज्ञानिक साहित्य को वे सिरे से नकार देंगें। मनोविज्ञान की सहायता से बालसाहित्यकार बच्चों की सोंच और उनकी भावना को समझ सकते हैं जिससे वे ऐसी कहानी या कविता की रचना कर सकते है जो बच्चों के मन तथा उनकी भावनाओं को छू जाए और साथ ही उनका परिष्कार भी कर सके।

बाल मनोविज्ञान के सहायता से साहित्यकार बालकों की आयु तथा उनकी मानसिक क्षमता के हिसाब से साहित्य सृजन कर सकता है जिससे बच्चों को उन रचनाओं को समझने में कोई कठिनाई न आए। बालकों के लिए सरल भाषा के साथ ही सचित्र का प्रयोग भी किया जाना चाहिए जिससे वो आसानी से भाषा को समझ सकें और पुस्तक के प्रति आकर्षित भी हों।

''असम्भाव्य परिस्थितियों तथा परियों की कहानियों की सहायता से कुतूहल की जागृति हमारे बालकों को चरित्र–निर्माण और सच्ची नागरिकता के क्षेत्र में हुत कम अग्रसर कर सकेगी। बालकों के स्वाभाविक विकास के लिए तो मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सीधे–सादे और सरल उद्देश्यों को लेकर सरल विषयों पर की गयी रचनाएं तथा कूतूहलपूर्ण समस्याओं का और भी कुतूहलपूर्ण समाधान निश्चय ही स्वस्थ बाल साहित्य के विकास में सहायक सिद्ध होंगे।''

डॉ0 रामकुमार वर्मा जी ने बाल मनोविज्ञान की और हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न किया है। वे ये बताना चाहते हैं कि बिना बाल मनोविज्ञान के कोई भी बाल साहित्य कोरी कल्पना ही सिद्ध होगा, उसका बालक के मानस पटल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

''बाल साहित्य बच्चों की रूचि जागृत करने वाला हो। जब बालक को आनन्द आयेगा तभी वह उसे पढ़ेगा। अगर उसमें शिक्षा मिल जाती है तो अच्छी बात है, किन्तु कोशिश नही होनी चाहिए, उपदेश देने की।''

उपर्युक्त कथन के माध्यम से योगेन्द्र कुमार लल्ला जी बाल मनोविज्ञान की महत्ता को स्थापित करते हुए कहते है कि कोई भी थोपी हुई चीज बालक कभी स्वीकार नही करता जो उसे रूचिकर लगता है, उसके मन को भाता है उसे ही बालक आपनाता है। अतएव बाल मनोविज्ञान ही वह सीढ़ी है जिसके द्वारा हम बालमन तक पहुँच सकते हैं तथा छुपे हुए मनोरंजक रूप में ही हम उन्हें नैतिकता तथा सद्चरित्र का पाठ पढ़ा सकते है। बाल स्वभाव के अध्ययन के बिना श्रेष्ठ बाल साहित्य की रचना असम्भव है। बड़े यदि बच्चों की भावनाओं को समझे बिना अपनी भावनाओं के हिसाब से उनके लिए साहित्य रचना करते हैं तो ये एक तरह से अपनी भावनाओं को बालकों पर थोपना हुआ जिससे बालक कभी भी तादात्म्य स्थापित नहीं कर पायेंगे। अतः उन्हें न तो सच्चा आनन्द प्राप्त हो पाएगा और न ही कोई शिक्षा। ये बालमन के प्रति अत्यन्त अन्याय वाली स्थिति हो जाएगी, इस स्थिति से बचने के लिए प्रत्येक बाल साहित्यकार को बालमनोविज्ञान का अध्ययन करना परमावश्यक है।

''साहित्यिक प्रतिभा के अतिरिक्त लेखकों को बाल मनोविज्ञान का भी ज्ञान होना चाहिए, जिससे वे बालकों की बौद्धिक और संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।''

जब बाल साहित्यकारों को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होता है तो वह बालसाहित्य के साथ उचित न्याय कर पाते हैं और बालकों के लिए अच्छा और लाभकारी बाल साहित्य निकलकर आता है।

बालकों की समस्याओं, जिज्ञासाओं और कल्पनाओं को उचित प्रकार से हल किया जाए तो वे प्रसन्न तथा संतुष्ट तो हो ही जाते हैं साथ ही उनका मानसिक तथा बौद्धिक विकास भी भली–भाँति होता है। वर्तमान परिदृश्य में देखने से ज्ञात होता है कि बाल साहित्य तथा बाल मनोविज्ञान अन्योन्यश्रित हो गए हैं। अर्थात् ये दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

बाल मनोविज्ञान की सहायता से बालमन की प्रत्येक उलझन या ग्रन्थि को आसानी से समझा जा सकता है तथा बाल साहित्यकार इन उलझनों को समझकर एक सही निष्कर्ष निकालता हैं और बालक को उन उलझनों से बाहर निकालता है।

बालमन की समस्याओं, उलझनों, अवस्थाओं, मानसिक संवेग, वातावरण, परिवार, स्कूल आदि के विषय में बाल मनोविज्ञान का अध्येता जितना आसानी से समझ सकता है उतना एक सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता। अतः एक बालसाहित्यकार को अवश्य ही मनोविज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। तभी वह बालक की तमाम समस्याओं व अनसुलझी गुत्थिओं को समझकर उसका निराकरण कर सकता है।

डॉ० रोहिताश्व अस्थाना के अनुसार ''आज की सदी विज्ञान की सदी है, बच्चों की सदी है अतः नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय मूल्यों के साथ–साथ वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक साहित्य लिखे जाने की आवश्यकता है। वे मानते हैं कि बाल साहित्य स्वस्थ सकारात्मक नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित रोचक तथा प्रेरक हो। बाल साहित्य मनोरंजक तो होना ही चाहिए साथ ही प्रयास यह करना कि बच्चे पढ़ने के बाद उसमें से स्वयं संदेश अथवा प्रेरणा ग्रहण कर लें। संदेश बच्चों पर आरोपित नहीं होना चाहिए।''

डा० अस्थाना जी के अनुसार वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक बालसाहित्य लिखे जाने की आवश्कता है और इस तरह का बालसाहित्य बिना मनोविज्ञान की सहायता के नहीं लिखा जा सकता क्योंकि मनोविज्ञान के द्वारा ही हम बालमन की भावनाओं को समझ सकते हैं और विज्ञान को बालक से जोड़कर किस प्रकार रोचक बनाया जाए कि बालक उसको आसानी से समझ भी सके और रोचकता भी बनी रहे। इसलिए प्रत्येक बाल साहित्यकार को बालमनोविज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना ही चाहिए।

निष्कर्ष–

किसी भी साहित्यकार की सफलता इसी में निहित है कि उसे मानव स्वभाव की कितनी अधिक परख है। इसलिए बाल स्वभाव की गहरी समझ रखने वाला बाल साहित्यकार ही सफल हो सकता है। इस गुण के अभाव में सफल बाल साहित्य की रचना सम्भव नहीं है। एक लेखक को बाल साहित्य लिखने से पहले बालकों के स्वभाव, मनोवृत्तियों, संवेगों, जिज्ञासाओं तथा कल्पनाओं आदि के विषय में अध्ययन करना चाहिए।

''सफल बाल साहित्य वही है जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएँ। यों तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहे हैं किन्तु सचमुच जो बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे, वही सफल बाल साहित्य लेखक है।''

''बाल साहित्य जहाँ बच्चों को मनोवैज्ञानिक रूप से सन्तुष्ट करता है, वहीं अपने प्रति उन्हें आकर्षित करने का मनोविज्ञान भी जगाता है।''

मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित बाल साहित्य ही बालमन को छू सकता है उनके लिए रूचिकर हो सकता है तथा उन्हें लाभान्वित भी कर सकता है। आधुनिक दौर में बालक मोबाइल, इंटरनेट तथा टेलीविजन की दुनिया में खो

सा गया है, वह दुनिया जितनी सकारात्मक दिखाई देती है उससे कहीं ज्यादा नकारात्मक प्रभाव बालकों के मन पर डालती है। बाल साहित्य तथा बाल मनोविज्ञान का संयोग ही बालमन को इस नकारात्मक से उबार सकता है।

निष्कर्षतः यह कहा सकता है कि बाल साहित्य की दृष्टि से बाल मनोविज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि बाल मनोविज्ञान ही है जो बाल साहित्य को उचित दिशा दिखाता है उसको पोषित तथा पल्लवित करता है। साथ ही सामाजिक हित में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है।

संदर्भ

- हिन्दी बाल साहित्य विमर्श 'साहित्यिक साक्षात्कार', डॉ० शकुन्तला कालरा, पृष्ठ–128
- हिन्दी बाल साहित्य आधुनिक परिदृश्य, डॉ० शकुन्तला कालरा, पृष्ठ–5

https://hi.mwikipedia.org

- हिन्दी बाल साहित्य आधुनिक परिदृश्य, डॉ० शकुन्तला कालरा, पृष्ठ–98
- डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा बाल साहित्य रचनालय को दिया गया संदेश ''हिन्दी बाल साहित्य की मान्यताएँ और आदर्श, लेखकरू डॉ० देवेन्द्रदत्त तिवारी
- आजकल, नवम्बर 2014, सं० फरहत परवीन, पृष्ठ–40
- आचार्य जुगल किशोर, शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा दिनांक 25 अगस्त 1962 को बाल साहित्य–रचनालय के लिए शुभ संदेश से।
- हिन्दी बाल साहित्य विमर्श 'साहित्यिक साक्षात्कार'–डॉ० शकुन्तला कालरा, पृष्ठ–128
- हिन्दी बाल साहित्य विमर्श 'साहित्यिक साक्षात्कार'–डॉ० शकुन्तला कालरा, पृष्ठ–128
- बाल साहित्यरू रचना और समीक्षा, हरिकृष्ण देवसरे, पृष्ठ 34.

Cite this Article:

मधुलिका चौधरी प्रो0 राम प्रताप सिंह,"बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान का महत्व" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, pp.43–47.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

मधुलिका चौधरी एवं प्रो0 राम प्रताप सिंह

For publication of research paper title

बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान का महत्व

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-04, Month January, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i4.06